School of Education

Certificate

I hereby declare that the short synopsis "मुक्त विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का आत्म प्रभावकारिता एवं भूमिका दुविधा के सन्दर्भ में अध्ययन" being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Education under school of Education of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2021-22 .

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof. / Dr. Dinesh Singh and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

(Signature)

(Ramesh Kumar Yadav)
(En. No.-2100906)

Research Supervisor

20/05/2025
DR. DINESH SINGH
Associate Professor, School of Education

02.06.2025
PROF. P. K. ASTALIN
Director, School of Education

02/06/25
PROF. P. K. PANDEY
Secretary of RDC/ Director, R&D Cell

Scanned with OKEN Scanner

मुक्त विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का आत्म प्रभावकारिता एवं भूमिका दुविधा के सन्दर्भ में अध्ययन

उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
के शिक्षा शास्त्र विषय की पी–एच0डी0
उपाधि हेतु प्रस्तावित

शोध– प्रारूप

शोध निर्देशक
डॉ0 दिनेश सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विद्याशाखा

शोधार्थी
रमेश कुमार यादव
ना.सं.–2100906

शिक्षा विद्याशाखा
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
2022

Scanned with OKEN Scanner

अमूर्त

शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा व्यवस्था के सर्वोत्तम परिणामों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, विशेषकर मुक्त विश्वविद्यालयों में, जहां शिक्षकों को विविध कार्यों की जिम्मेदारी निभानी होती है। मुक्त विश्वविद्यालय के शिक्षकों को न केवल पारंपरिक कक्षा–शिक्षण, बल्कि पाठ्यक्रम विकास, मूल्यांकन, और प्रशासनिक कार्यों क भी प्रबंधन करना पड़ता है, जिसके कारण मानसिक तनाव में वृद्धि हो सकती है। इसके अतिरिक्त, भूमिका दुविधा उस समय उत्पन्न होती है, जब एक शिक्षक से कई अपेक्षाएँ और जिम्मेदारियाँ होती हैं। जिसका कि शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है। इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि कैसे आत्म प्रभावकारिता और भूमिका दुविधा, मुक्त विश्वविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णानात्मक एवं सह–संबंधात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया जयेगा। हिन्दी भाषी राज्यों के मुक्त विश्वविद्यालयों के शिक्षकों से मानकीकृत उपकरणों के माध्यम से समंकों को एकात्रित किये जायेगें। जिसके लिए स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श प्रतिचयन विधि द्वारा विभिन्न संकायों के 250 शिक्षकों को सम्मिलित किया जायेगा। प्राप्त समंकों के विश्लेषण हेतु टी–परीक्षण, गुणनफल अघूर्ण सहसम्बंध गुणांक एवं प्रसरण विश्लेषण का प्रयोग किया जायेगा।

यह अध्ययन शैक्षिक वातावरण में सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। स्वतंत्रता, आत्मविश्वास, और कार्य के प्रति प्रेरणा को बढ़ाने के लिए एक मानसिक स्वास्थ्य मॉडल तैयार करने की दिशा में भी योगदान दे सकता है। अध्ययन के माध्यम से यह भी ज्ञात करने का प्रयास किया जाएगा कि किस प्रकार आत्म प्रभावकारिता की भावना शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य में सुधार ला सकती है और भूमिका दुविधा को कैसे कम किया जा सकता है।

मुख्य शब्द– मानसिक स्वास्थ्य, आत्मप्रभावकारिता, भूमिका–दुविधा, मुक्त विश्वविद्यालय, प्रसरण विश्लेषण, मूल्यांकन ।

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

क्र0 सं0	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना	1–2
2.	साहित्य सर्वेक्षण	2–5
3.	शोध अध्ययन का औचित्य एवं समस्या कथन	5–6
4.	अध्ययन के उद्देश्य	7–7
5.	शोध पद्धति	8–11
6.	अध्ययन की सार्थकता	11–12

संदर्भ ग्रंथ सूची

प्लेगिरिज्म रिर्पोट

Scanned with OKEN Scanner

प्रस्तावना –

शिक्षा मानवीय चिन्तन, उसकी कार्यप्रणाली एवं उसके व्यवहार को निर्देशित करने का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा के द्वारा बालक के व्यवहारों का नियमन एवं मार्गान्तरीकरण करके उसका सर्वांगीण विकास किया जाता है। शिक्षा का विकास क्रम जीवन के क्रम से जुड़ा होने के कारण आजीवन चलता रहता है, किन्तु शिक्षा का औपचारिक माध्यम नियंत्रित परिस्थितियों में निर्धारित समयावधि, पाठ्यक्रम एवं शिक्षकों द्वारा सम्पादित किया जाता है।

वर्तमान समय में शिक्षा के तीन स्तर निर्धारित किये गये हैं। प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर और उच्च स्तर। उच्च स्तर की शिक्षा को प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के लिए व्यवस्था प्रदान करने का साधन माना जाता है। उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति प्रशिक्षण के उपरान्त प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर शिक्षण का दायित्व संभालते हैं। उच्च शिक्षा के उपरान्त राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा या पी–एच0डी0 उपाधि धारण कर उच्च शिक्षण का कार्य भी करते हैं। इस प्रकार उच्च शिक्षा, प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर के लिए आधारभूत तत्व शिक्षक को तैयार करती है। साथ ही देश के उच्च पदस्थ चयन हेतु उत्पादक नागरिक तैयार करती है। इसलिए उच्च शिक्षा को देश की शैक्षिक संरचना के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं महत्वपूर्ण माना जाता है।

उच्च शिक्षा की उपयोगिता, आवश्यकता एवं मांग को ध्यान में रखकर मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना कर शिक्षा प्रदान की जा रही है। उच्च स्तर पर छात्रों में तर्क, निर्णय, चिन्तन, संवेगों की प्रबलता एवं जीवन के प्रति समुचित दृष्टि का विकास हो जाने के कारण इस स्तर के शिक्षकों का उत्तरदायित्व और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। इसके लिए शिक्षकों को मानसिक रूप से स्वस्थ्य होना अत्यन्त आवश्यक है, किन्तु यदि किसी शैक्षिक परिस्थिति में अपनी इच्छा, योग्यता एवं क्षमता को सही ढंग से प्रदर्शित न कर पाने पर भी वह आत्मविश्वास कमी महसूस करता है। शिक्षक में अपने वृत्ति अनिश्चितता के कारण भूमिका दुविधा

Scanned with OKEN Scanner

उत्पन्न होती है। जो तनाव को जन्म देती है, जिसका सीधा प्रभाव उसकी व्यवसायिक दक्षता पर भी पड़ता है। जिसके परिणाम-स्वरूप शिक्षा के गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण –

रिजो (1970) ने भूमिका अस्पष्टता को कार्य संतुष्टि के साथ सार्थक रूप से सह-सम्बन्धित पाया। अध्ययन में कार्य संतुष्टि और भूमिका संघर्ष के बीच भी थोड़ा समर्थन प्रकट किया गया।

टोसी (1971) ने अपने अध्ययन में पाया कि भूमिका अस्पष्टता और कार्य संतुष्टि के बीच सार्थक रूप से सह संबंधित नही था।

हैमर और टोसी (1974) ने अपने अध्ययन में पाया कि प्रबंधकों की भूमिका अस्पष्टता और भागीदारी के बीच कोई सहसंबंध नहीं था।

उपाध्याय और सिंह (2001) ने कॉलेज के शिक्षकों और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच भूमिका संघर्ष एवं व्यावसायिक तनाव के विभिन्न आयामों का पता लगाया और अपने अध्ययन में पाया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की भूमिका अस्पष्टता से जुड़े कारकों पर भी कॉलेज के शिक्षकों में तनाव का स्तर काफी कम था।

लेम्बी (2007) ने पाया कि स्कूल परामर्शदाताओं को स्कूल मनोवैज्ञानिकों, स्कूल सामाजिक कार्यकर्ताओं और शिक्षकों की तुलना में भूमिका अस्पष्टता के कारण उच्च स्तर की भूमिका संघर्ष का सामना करना पड़ा था। इसके अलावा स्कूल परामर्शदाताओं की कार्य संतुष्टि पर भूमिका संघर्ष एवं भूमिका अस्पष्टता ने अपना महत्वपूर्ण प्रभाव दिखाया था।

गुप्ता और कुमार (2010) ने कॉलेज के छात्रों के बीच आत्म-प्रभावकारिता और मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। जिसमें 200 प्रतिभागियों (100 पुरूष और 100 महिला) को चुना गया जो कि कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के विज्ञान और

Scanned with OKEN Scanner

कला वर्ग से संबंधित थे। अध्ययन में पाया कि कॉलेज के छात्रों में आत्म–प्रभावकारिता एवं मानसिक स्वास्थ्य में सकारात्मक सह संबंध था।

मोहम्मद और बिन्दु (2011) ने शिक्षक और छात्रों के बीच आत्म–प्रभावकारिता एवं मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। अध्ययन के लिए 170 शिक्षक और छात्रों का यादृच्छिक रूप से चयन किया जो कि ईरानी के बूसेहर विश्वविद्यालय से थे। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षक और छात्रों की आत्म–प्रभावकारिता एवं मानसिक स्वास्थ्य में सकारात्मक सहसम्बन्ध था।

मुस्तफई और अन्य (2012) ने विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच आत्म–प्रभावकारिता एवं सामान्य स्वास्थ्य के बीच संबंधों का आंकलन करने के लिए अध्ययन किया। विश्वविद्यालय के 321 छात्रों को यादृच्छिक रूप से अध्ययन के लिए चयनित किया गया। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि आत्म–प्रभावकारिता का सामान्य स्वास्थ्य के साथ सकारात्मक सहसंबंध था।

जाधव (2013) ने स्कूली शिक्षकों के बीच व्यावसायिक आत्म–प्रभावकारिता और मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। कर्नाटक के धारवाड़ और बेलगाम जिले से 600 प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का चयन किया। अध्ययन में पाया कि स्कूल के शिक्षकों के बीच व्यावसायिक आत्म–प्रभावकारिता और मानसिक स्वास्थ्य के बीच सकारात्मक सहसंबंध था।

जुवान, हन्नान और नामोम (2018) ने विज्ञान के संबंध में छात्रों की आत्म–प्रभावकारिता की जांच की। शोधकर्ता ने दो प्रमुख प्रश्नों को शोध में शामिल किया : (1) दक्षिण अफ्रीका में कक्षा 9 के छात्रों के लिए आत्म–प्रभावकारिता और विज्ञान उपलब्धि के बीच क्या संबंध है। (2) दक्षिण अफ्रीका में 9 के छात्रों की आत्म–प्रभावकारिता से जुड़ें प्रासंगिक कारक क्या है? दक्षिण अफ्रीका में ग्रेड 9 के 12514 छात्रों से डाटा एकत्र किया गया था। विज्ञान में उन्हीं छात्रों की आत्म–प्रभावकारिता की जांच करने के लिए शामिल किया जो अंतराष्ट्रीय गणित और विज्ञान अध्ययन में 2015 के रुझानों में भाग लिया था। अध्ययन के निष्कर्षों

ने आत्म–प्रभावकारिता और विज्ञान उपलब्धि के बीच एक सकारात्मक संबंध प्रकट किया।

फेवजी और डिंक (2019) ने पाया कि भूमिका अस्पष्टता प्रधानाचार्यों के बर्नआउट को प्रभावित किया था। अध्ययन के लिए नमूने में 545 प्रधानाचार्यों को शामिल किया था।

कुमार (2020) ने कोविड–19 महामारी के दौरान विश्वविद्यालयों के शिक्षण और गैर–शिक्षण कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। अध्ययन के नमूने में 110 कर्मचारियों को शामिल किया, जिसमें से शिक्षण (n=55) और गैर –शिक्षण (n=55) विभागों से यादृच्छिक रूप में चुना गया था। जो कि आरा और इ सके आस–पास स्थित कॉलेजों से थे। कोविड प्रकोप के दौरान मोबाइल और सोशल मीडिया पर सम्पर्क करके मानकीकृत मानसिक स्वास्थ्य सूची को नमूने पर व्यक्तिगत रूप से प्रकाशित किया गया था। इस सूची में 56 आइटम शालि हैं जो विभिन्न आयामों से हैं। इस सूची में उच्च अंक अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को दर्शाता है। परिणमों ने दो समूहों के बीच महत्वपूर्ण अंतर प्रकट किया। जिसमें गैर शिक्षण कर्मचारियों की तुलना में शिक्षण कर्मचारियों का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर पाया गया है।

दुबे, और उपाध्याय (2020) : ने बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों के उच्च और निम्न भावात्मक बुद्धि वाले प्रशिक्षणार्थियों के बीच भावात्मक बुद्धि और शिक्षण आत्म–प्रभावकारिता का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के लिए प्रयागराज शहर के बी0 एड0 चुतर्थ सेमेस्टर के 135 प्रशिक्षणार्थियों को न्यादर्श में शामिल किया था। अध्ययन में पाया कि कला वर्ग की महिला बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि और शिक्षण आत्म–प्रभावकारिता के बीच सकारात्मक सह–संबंध था। पुरूष बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि और शिक्षण आत्म–प्रभावकारिता के बीच कोई संबंध प्रदर्शित नहीं किया। महिला बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की उच्च भावात्मक बुद्धि वाली शिक्षण आत्म–प्रभावकारिता निम्न

Scanned with OKEN Scanner

भावात्मक बुद्धि वाली महिला बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा अधिक थी। पुरुष बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के बीच में उच्च एवं निम्न भावात्मक बुद्धि का शिक्षण आत्म–प्रभावकारिता में कोई सह–सम्बन्ध नहीं था।

उपरोक्त अध्ययनों से स्पष्ट है कि अधिकांश अध्ययन जो भूमिका अस्पष्टता से सम्बन्धित है वे कालेज के शिक्षको और उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षको के मध्य सह–सम्बन्ध से सम्बन्धित है। कुछ अध्ययन भूमिका अस्पष्टता एवं सन्तुष्टि के मध्य सह–सम्बन्ध से सम्बन्धित है। कुछ अध्ययनो में भूमिका अस्पष्टता और कार्य सन्तुष्टि के बीच सार्थक सह–सम्बन्ध था और कुछ अध्ययनो में भूमिका अस्पष्टता और कार्य सन्तुष्टि के बीच सार्थक सह–सम्बन्ध नही था। मानसिक स्वास्थ्य एवं आत्म–प्रभावकारिता से सम्बन्धित जो अध्ययन हुए है वे प्राथमिक, माध्यमिक तथा परम्परागत डिग्री कालेज एवं विश्वविद्यालयों के शिक्षको से सम्बन्धित है। मुक्त विश्वविद्यालयों के शिक्षकों की कार्यप्रणाली परम्परागत विश्वविद्यालयों के शिक्षकों से भिन्न है। इसलिए मुक्त विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के मध्य मानसिक स्वास्थ्य का आत्म प्रभावकारिता एवं भूमिका दुविधा के का भी अध्ययन किया जाना चाहिए।

शोध अध्ययन का औचित्य एवं समस्या कथन –

शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले अनेकानेक कारण हो सकते हैं। जिनमें से एक कारण अपनी संवेगात्मक अभिव्यक्ति को दबाना भी हो सकता है। जब शिक्षक किसी एक या अनेक कारणों से ग्रसित हो जाता है तो उसमें दबाव उत्पन्न हो जाता है। किसी धरना, विचार एवं कार्य के प्रति व्यक्तियों की प्रतिक्रियाएं भिन्न भिन्न हो सकती हैं और शिक्षकों के अपने कार्यों के पूर्ण न हो पाने के कारण उसमें भय उत्पन्न हो जाता है जो दबाव को जन्म देता है। जीवन में सफल होने के लिए मानसिक रूप से स्वस्थ्य होना आवश्यक है। अतः

Scanned with OKEN Scanner

मानसिक रूप से स्वस्थ्य शिक्षक अपने कार्य में अधिक सफल हो सकता है तथा अपने आपको भूमिका दुविधा से बचा सकता है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थाओं की कार्य प्रणाली में शिक्षकों को शिक्षण के साथ–साथ अन्य प्रकार के अनेकों कार्यों का सम्पादन करना पड़ता है, जिससे उनके मन में कार्य के प्रति अनिश्चिता का भाव पैदा होता है। जिसके कारण वे भूमिका दुविधा महसूस करने लगते है। मानसिक स्वास्थ्य शिक्षक की वह योग्यता है जिसमें वह अपने संवेगों के प्रदर्शन एवं नियंत्रण की दक्षता के साथ–साथ छात्र एवं सहयोगियों के साथ विभिन्न परिस्थितियों में समायोजन करने में समर्थ होता है तथा कार्यों का सम्पादन उचित ढंग से कर सकता है। प्रस्तावित शोध समस्या का चयन शोधकर्ता की अभिरूचि तथा इस क्षेत्र में शोध कार्यों की अल्पता के कारण किया गया है। शोध कार्य हेतु सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के दौरान शोधकर्ता को इस महत्वपूर्ण एवं उपयोगी बिन्दु पर शोधकार्य अत्यन्त न्यून दिखायी पड़े जो कुछ शोध कार्य हुए भी हैं उनके निष्कर्षों में भिन्नता है। अधिकांश शोध प्राथमिक, माध्यमिक एवं परम्परागत विश्वविद्यालयों के शिक्षकों एवं छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य एवं आत्मप्रभावकारिता के मध्य सहसम्बन्ध से सम्बन्धित हैं। मुक्त विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का आत्म प्रभावकारिता के मध्य सहसम्बन्ध एवं भूमिका दुविधा से संबंधित अध्ययनों का अभाव है। वर्तमान समय में दूरस्थ शिक्षण संस्थानों एवं मुक्त विश्वविद्यालयों का शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण स्थान है।

अतः मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थाओं के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य आत्मप्रभावकारिता एवं भूमिका दुविधा का अध्ययन किया जाना अत्यन्त प्रासंगिक एवं औचित्यपूर्ण है। शोध अध्ययन समस्या का कथन **"मुक्त विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का आत्म प्रभावकारिता एवं भूमिका दुविधा के सन्दर्भ में अध्ययन"** के रूप में किया जा सकता है।

Scanned with OKEN Scanner

शोध अध्ययन के उद्देश्य –

शोधकर्ता द्वारा शोध अध्ययन हेतु निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किये जायेंगे –

1. मुक्त विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य एवं आत्म प्रभावकारिता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. मुक्त विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य एवं भूमिका दुविधा के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. मुक्त विश्वविद्यालयों के उच्च, मध्यम व निम्न आत्म प्रभावकारिता वाले शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य की तुलना करना।
4. मुक्त विश्वविद्यालयों के उच्च, मध्यम व निम्न भूमिका दुविधा वाले शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य की तुलना करना।
5. मुक्त विश्वविद्यालयों के विभिन्न संकायों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य की तुलना करना।
6. मुक्त विश्वविद्यालयों के विभिन्न संकायों के शिक्षकों के आत्म प्रभावकारिता की तुलना करना।
7. मुक्त विश्वविद्यालयों के विभन्न संकायों के शिक्षकों के भूमिका दुविधा की तुलना करना।

Scanned with OKEN Scanner

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ –

शोधकर्ता द्वारा अपने शोध अध्ययन के उद्देश्य के लिए निम्नलिखित शोध परिकल्पनाओं का निर्माण किया जायेगा –

1. मुक्त विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य एवं आत्म प्रभावकारिता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।
2. मुक्त विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य एवं भूमिका दुविधा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।
3. मुक्त विश्वविद्यालयों के उच्च, मध्यम व निम्न आत्म प्रभावकारिता वाले शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर है।
4. मुक्त विश्वविद्यालयों के उच्च, मध्यम व निम्न भूमिका दुविधा वाले शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर है।
5. मुक्त विश्वविद्यालयों के विभिन्न संकायों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर है।
6. मुक्त विश्वविद्यालयों के विभिन्न संकायों के शिक्षकों के आत्म प्रभावकारिता में सार्थक अन्तर है।
7. मुक्त विश्वविद्यालयों के विभिन्न संकायों के शिक्षकों के भूमिका दुविधा में सार्थक अन्तर है।

शोध अभिकल्प –

शोध विधि –

प्रस्तावित शोध अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसांधान की सहसम्बन्धात्मक एवं कारणात्मक तुलनात्मक विधि पर आधारित होगा तथा प्रदत्तों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

Scanned with OKEN Scanner

जनसंख्या एवं न्यादर्श –

प्रस्तावित शोध अध्ययन की जनसंख्या हिन्दी भाषी राज्यों में स्थित राज्य मुक्त विश्वविद्यालय होंगे। न्यादर्श का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श प्रतिचयन विधि द्वारा किया जायेगा। जिसमें मुक्त विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय, विज्ञान संकाय, मानविकी संकाय, समाज विज्ञान संकाय, प्रबन्धन अध्ययन संकाय के 250 शिक्षकों को सम्मिलित किया जायेगा।

शोध उपकरण –

मानसिक स्वास्थ्य का आत्म प्रभावकारिता एवं भूमिका दुविधा से संबंधित समंकों के संकलन हेतु निम्नलिखित शोध उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा –

- स्वनिर्मित आत्म प्रभावकारिता मापनी।
- प्रो० एस० पी० गुप्ता एवं डॉ0 दिनेश सिंह द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य प्रश्नावली।
- प्रो० एस० पी० गुप्ता एवं डॉ० दिनेश सिंह द्वारा निर्मित शिक्षक भूमिका दुविधा प्रश्नावली।

सांख्यिकीय विधियाँ –

चयनित न्यादर्श से मानसिक स्वास्थ्य, आत्म प्रभावकारिता एवं भूमिका दुविधा से सम्बन्धित प्राप्त समंकों के विश्लेषण हेतु टी–परीक्षण, गुणनफल आघूर्ण सहसंबंध गुणांक एवं प्रसरण विश्लेषण का प्रयोग किया जायेगा।

प्रयुक्त शब्दों की संक्रियात्मक परिभाषाएं :–

मानसिक स्वास्थ्य :– मानसिक स्वास्थ्य किसी भी व्यक्ति की वह योगयता है जिसके द्वारा वह व्यक्तिगत व सामाजिक सन्तुलन स्थापित करता है अर्थात् मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ व्यक्ति अपने कार्य में, विद्यालय में, परिवार के सहयोगियों तथा समुदाय के साथ ठीक प्रकार से रह सकें। इसका अभिप्राय प्रत्येक व्यक्ति के उस तरीके से है जिसके द्वारा वह अपनी इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं, विचारों,

Scanned with OKEN Scanner

भावनाओं और अन्तरात्मा का समन्वय करता है जिससे वह जीवन की उन माँगो को पूरा कर सके जिसका उसे सामना करना है।

कुप्पू स्वामी के शब्दों में, "मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ दैनिक जीवन में भावनाओं इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं एवं आदर्शों में सन्तुलन बनाये रखने की योग्यता है। इसका अर्थ जीवन की वास्तवविकताओं का सामना करने तथा उनको स्वीकार करने की योग्यता है।"

लैडेल के अनुसार– "मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ है वास्तविकता के धरातल पर वातावरण से पर्याप्त समायोजन करने की योग्यता।"

आत्मप्रभावकारिता :– किसी कार्य को पूरा करने या लक्ष्य प्राप्त करने की उनकी क्षमता में किसी व्यक्ति के आत्म विश्वास को संदर्भित करता है। यह अवधारणा मूल रुप से अल्वर्ट बण्डूरा द्वारा विकसित की गयी थी। आज मनोवैज्ञानिकों का तर्क है कि आत्म प्रभावकारिता की भावना हमें प्रभावित करती हैं।

अलबर्ट बण्डूरा के अनुसार– "आत्म–प्रभावकारिता पिछलें अनुभव, अवलोकन, दृढ़ संकल्प और भावना का उत्पाद है।"

आत्म प्रभावकारिता एक मजबूत भावना, मानव उपलब्धि और कल्याण को बढ़ावा देती है। उच्च आत्म प्रभावकारिता वाला व्यक्ति चुनौतियों को उन चीजों के रूप में देखता है, जिन्हें टालने के बजाय महारत हासिल करनी चाहिए।

भूमिका दुविधा –

एक निश्चित भूमिका के भीतर आमतौर पर नौकरी या कार्यस्थल में भूमिका दुविधा तब होती है, जब लोग अपनी भूमिका अपेक्षाओं के बारे में अस्पष्ट या अनिश्चित होते हैं। भूमिका दुविधा उत्पन्न होती है। जब व्यक्ति के कार्य की परिभाषा अस्पष्ट या गलत परिभाषित हो। व्यावसायिक तनाव के क्षेत्रों में सबसे व्यापक रूप से अध्ययन किये जाने वाले चरों में से एक है, क्योंकि यह किसी की

Scanned with OKEN Scanner

कार्य स्थिति के व्यक्तिपरक निर्णय का प्रतिनिधित्व कराता है। लोगों को उस भूमिका की जिम्मेदारियों से अवगत कराया जाना चाहिए जो व्यवहार प्रदर्शन या अपेक्षाएं भूमिका दुविधा में शामिल हो सकती है। भूमिका दुविधा उत्पन्न होने पर व्यक्ति अनिश्चितता महसूस करता है कि कौन सा व्यवहार उचित है और कौन सा नहीं। उदाहरण के लिए सोच सकते हैं कि वे अनुचित कार्य व्यवहार में संलग्न है। दूसरी ओर वे सोच सकते हैं कि वे उपयुक्त कार्य व्यवहारों में संलग्न होने में असफल हो रहा है। अधिकांश व्यक्ति इन दोनों को कष्टदायक पाते हैं। भूमिका सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक कर्मचारी के पास संगठन के भीतर अधिकारों एवं जिम्मेदारियों का एक समूह होता है। जो कर्मचारी अपने कार्य विवरण के रूप में लेते हैं तथा संगठनात्मक रूप से बनाये रखा जाता है। एक शिक्षक की औपचारिक भूमिका में ग्रेडिंग टेस्ट और गृहकार्य असाइन करना शामिल है, इसके अलावा अनेक अनौपचारिक गतिविधियों में भी शामिल होता है। वैसे भूमिका दुविधा आमतौर पर औपचारिक भूमिकाओं से संबंधित अनिश्चितता के रूप में परिचालित होती है। कई अध्ययनों से पता चला है कि भूमिका दुविधा खराब मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य की अभिव्यक्ति से संबंधित है। भूमिका दुविधा पर्यवेक्षण से असंतोष, सहकर्मियों से असंतोष, कम संगठनात्मक प्रतिबद्धता, उच्च कारोबार का इरादा, कार्य से अनुपस्थित होना जैसे दृष्टिकोणों से जुड़ी है।

शोध अध्ययन का सीमांकन –

कोई भी शोध अध्ययन अपने आप में पूर्ण नहीं होता है। अध्ययन के उद्देश्य एवं अध्ययन की समय–सीमा को ध्यान में रखकर किसी भी शोध कार्य का सीमांकन करना आवश्यक होता है जिससे कि समय, अपव्यय से बचा जा सके। शोधकर्ता द्वारा इन्हीं सम्पूर्ण कारकों को ध्यान में रखकर अपने शोध अध्ययन का सीमांकन किया है। प्रस्तावित अध्ययन हिन्दी भाषी राज्यों में स्थित राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय विज्ञान संकाय, समाज विज्ञान संकाय, प्रबन्धन

Scanned with OKEN Scanner

अध्ययन संकाय, मानविकी संकाय के 250 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं पर ही आधारित होगा।

अध्ययन की सार्थकता–

सामाजिक तथा राष्ट्रीय विकास का सर्वाधिक प्रभावशाली साधन शिक्षा है। शिक्षा के अवसरों को बढ़ाने के लिए, शिक्षा के लोकतंत्रीकरण के एक साधन के रूप में और इसे जीवन भर चलने वाली प्रकिया बनाने के लिए खुली शिक्षा प्रणाली की व्यवस्था की गयी है। जिसका लचीलापन एवं नवीनता हमारे देश के नागरिकों की आवश्यकताओं के अनुकूल है। शिक्षा की दूरस्थ एवं खुली प्रणाली ने हमारे देश के नागरिकों को उच्च शिक्षा तक पहुँच बढ़ाने में प्रयासों को गति प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। पिछले कुछ दर्शकों में कई मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना की गयी है। जो भविष्य में कम लागत में तथा गुणवत्ता पूर्व शिक्षा प्रदान करने में अपनी विशेष भूमिका निभायेगें। शिक्षक प्रत्येक शिक्षण संस्थान का हृदय होता है तथा शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में उसकी विशेष भूमिका होती है। अतः शिक्षण संस्थान की सफलता काफी हद तक शिक्षको की गुणवत्ता चरित्र पर निर्भर करती है। यह न केवल शिक्षा की पारम्परिक प्रणाली के लिए बल्कि दूरस्थ शिक्षा संस्थानों व मुक्त विश्वविद्यालयों के लिए भी सत्य है। इस दृष्टि से राष्ट्र के उत्थान में अध्यापकों की भूमिका असंदिग्ध है, परन्तु अनेक मनोवैज्ञानिक अध्ययनों ने सिद्ध कर दिया है कि मानसिक रूप से स्वस्थ्य अध्यापक ही अपने विद्यार्थियों में ज्ञात, बोध, कला, कौशल व अभिवृत्ति आदि का विकास कर सकता है तथा विकास के मार्ग पर आगे बढ़ा सकता है। इसलिए अध्यापकों के मानसिक स्वस्थ्य का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है। प्रस्तावित अध्ययन के द्वारा अध्यापकों के मानसिक स्वस्थ्य का सम्बन्ध उसकी आत्म प्रभावकारिता एवं भूमिका दुविधा के संदर्भ में देखने का प्रयास किया जायेगा।

Scanned with OKEN Scanner

अध्ययन के परिणामों में अध्यापको के मानसिक स्वस्थ्य की गत्यात्मकता को समझने में सहायता मिलने की आशा की जाती है। जो प्रस्तावित अध्ययन की सार्थकता व आवश्यकता को सिद्ध करती है।

अध्यायों का विभाजन –

प्रस्तावित शोध अध्ययन को पाँच अध्यायों में विभाजित किया जायेगा। अध्यायों का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया जायेगा–

प्रथम अध्याय : प्रस्तावना

द्वितीय अध्याय : सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

तृतीय अध्याय : शोध अभिकल्प

चतुर्थ अध्याय : समंकों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

पंचम अध्याय : परिकल्पना परीक्षण, निष्कर्ष एवं सुझाव

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

परिशिष्ट

Scanned with OKEN Scanner

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

- उपाध्याय, बी.के. एण्ड सिंह, बी. (2001) : अक्युपेशनल स्ट्रेसइक्लूडिंग रोल कॉनफिक्ट एमंग कॉलेज एण्ड हायर सेकेण्डरी स्कूल टीचर साइको–लिंगुआ, 31(1) 49–52.
- काट्ज, डी. और कान, आरएल (1978) : संगठनों का सामाजिक मनोवविज्ञान। न्यूयार्क : विली।
- कुमार, अजय (2020) : ए स्टडी ऑफ मेंटल हेल्थ ड्यूरिंग कोविड–19 पैनडेमिक एमंग टीचिंग एण्ड नान–टीचिंग यूनिवर्सिटी एम्पलाइस, ईस्ट अफ्रीकन स्कालर जर्नल ऑफ साइकालॉजी एण्ड बिहेवियरल सासाइन्स, 2(4), 71–77.
- गुड, बार व स्केट्स (1954) : मेथड्स ऑफ रिसर्च–एजुकेशनल, साइकोलॉजिकल, सोशियोलॉजिकल, न्यूयार्क, एप्पलेटन सेंचुरी क्राफ्ट।
- गुप्ता, एस.पी०. (2020) : अनुसंधान संदर्शिका–सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि (संसोधित संस्करण), इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन.
- गुप्ता गरिमा, एण्ड कुमार, सुशील (2010) : मेण्टल हेल्थ रिलेशन टू इमोशनल इंटेलीजेन्स एण्ड सेल्फ एफीकेसी एमंग कॉलेज स्टूडेण्ट जर्नल ऑफ द एण्डियन अकेडमी ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी जनवरी 2010, 36(1), 61–67.
- जाघव, एस.जी. (2013) : अक्युपेशनल सेल्फ एफीकेसी, रोल कॉनफिलक्ट एण्ड मेंटल हेल्थ ऑफ प्रायमरी स्कूल टीचर, रिव्यू ऑफ रिसर्च 2013, 2(4).
- जुवान, ए. हन्नान, एस. एण्ड नामोम, सी. (2018) : आई विलीव आई कैन डू साइन्स : सेल्फ एफीकेसी एण्ड साइन्स अचीवमेंट ऑफ ग्रेड 9 स्टूडेंट इन साउथ अफ्रीका, साउथ अफ्रीका जर्नल ऑफ साइन्स, 7(8) 1-7.

Scanned with OKEN Scanner

- दुबे, आर. एण्ड उपाध्याय, पी. (2020) : इम्पैक्ट ऑफ इमोशलन इंटेलिजेंस एण्ड टीचिंग सेल्फ एफीकेसी एमंग बी0एड0 स्टूडेन्टस : ए स्टडी एनिशयन जर्नल ऑफ एडवांस स्टडीज iv(i) 393 - 400.
- फिशर, सीडी, और गिटलसन, आर. (1983) : भूमिका संघर्ष और अस्पष्टता के सहसंबंधों का मेटा–विश्लेषण। अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान का जर्नल, 68, 320–333।
- फेवजी, वाई एण्ड डिंक, एम. एस. (2019). फैक्टर्स इनफ्लूएनसिंग बर्नआउट आफ द प्रिंसिपल्स : ए पायलट स्टडी इन फ्लेमिश स्कूल ऑफ बेल्जियम, इकोनॉमिक रिसर्च, 32 (1), 3538–3553.
- बेस्ट, जॉन डब्लू (1982) : रिसर्च इन एजुकेशन, नई दिल्ली, प्रिन्टिस हॉल आफ इण्डिया (प्रा0लि0)।
- बीहर, टीए, वॉल्श, जेटी और टेबर, टीडी (1976) : व्यक्तिगत और संगठनात्मक रूप से महत्वपूर्ण राज्यों के तनाव का संबंध मॉडरेटरह के रूप में उच्च क्रम की जरूरतें। एप्लाइड मनोविज्ञान का जर्नल, 61, 41–47.
- मुस्तफई अली, मोहीद्दीन एण्ड मुस्तफई मोहम्मद खान, अहमद (2012) : द रिलेशनसिप बिटवीन सेल्फ–एफीकेसी एण्ड इट्स सबस्केल्स बिथ मेण्टल हेल्थ इन यूनिवर्सिटी स्टूडेण्टस पुयामेनूर यूनिवर्सिटी, तेहरान, इरान एन्नुअल्स ऑफ बायोलॉजिकल रिसर्च, 3(5) : 2433–2438.
- मोहम्मद, शेखानी एण्ड बिन्दु, पी. नायर (2011) : सेल्फ एफीकेसी एण्ड मेण्टल हेल्थ ऑफ वूमेन टीचर स्टूडेन्टस, जर्नल ऑफ द इण्डियन एकेडमी ऑफ अप्लाइड साइकोलॉजी फरवरी 2011, वोल. 37 स्पेशल इस्सु, 34–39.
- रिजो, जे.आर. हाउस, आर. जे. एण्ड लिंटजमैन, एस.आई. (1970) : रोल कनफ्लिक्ट एण्ड एम्बिग्यूटी इन कॉमप्लेक्स आर्गेनाइजेशन्स, एडमिनिसट्रेटिव साइन्स क्यार्टरलि, 15, 150–163.

Scanned with OKEN Scanner

- लेम्बी, जी (2007) : द कन्ट्रीब्यूशन ऑफ इगो डबलपमेण्ट लेवल इ बर्नआउट इन स्कूल काउन्सलर्स, इम्पलीकेशन फॉर प्रोफेशनल स्कूल काउनसलर्स जर्नल ऑफ काउन्सलिंग एण्ड डबलपमेण्ट, 85, 82–88.
- हैमर, डब्लू. सी. एण्ड टोसी, डब्लू. एच. (1973) : रिलेशनसिप ऑफ रोल कॉनफ्लिक्ट एण्ड रोल एम्बिग्यूटी ऑफ जॉब इनवोल्वमेण्ट मेजर्स जर्नल ऑफ अप्लाइड साइकोलॉजी, 58, 4248.

Scanned with OKEN Scanner

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language	Hindi

Submission Information

Author Name	Ramesh Kumar Yadav
Title	मुक्त विश्वविद्यालय के शिक्षको के मानसिक स्वास्थ्य का आत्म प्रभावकारिता एव भूमिका दुविधा के संदर्भ मे अध्ययन
Paper/Submission ID	3609119
Submitted by	dineshedu.alld@gmail.com
Submission Date	2025-05-13 16:07:20
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity	**3%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

Scanned with OKEN Scanner

DrillBit

DrillBit Similarity Report

3	6	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Paper Submitted to Hemchand Yadav Vishwavidyalaya, Durg	1	Student Paper
2	Paper Submitted to Banaras Hindu University	<1	Student Paper
3	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
4	Paper Submitted to University of Allahabad	<1	Student Paper
5	Paper Submitted to Siddharth University	<1	Student Paper
6	Paper Submitted to Patliputra University, Patna	<1	Student Paper

Scanned with OKEN Scanner